सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक

सांतसा

मासिक मुखपत्र

ऊर्ज, आश्विन–कार्तिक २०६७ वि., सितम्बर–अक्तूबर २०१० ई.
१,९६,०८,५३,११२ सृष्टि संवत् वर्ष – १३ अंक – ८

आर्यवीर प्रकाशन
सम्पादक : ब्र.अरुणकुमार "आर्यवीर"
पुनीत प्लाझा, फ्लैट १, प्लॉट १५, सेक्टर ३०,
सानपाडा, नवी मुम्बई ४००७०५ महाराष्ट्र
✆ ९२२०५६९५९१, ९८९२९८९७२३
E-mail : aryaveer@rediffmail.com

उपकार्यालय : सांतसा न्यास
प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४,
स्मृतिनगर, भिलाईनगर, जि.दुर्ग,
४९००२० छत्तीसगढ़
✆ ०७८८–२२८४८८४,

<www.santasa.org>, <www.hellwithdemocracy.org>

"लोकतन्त्री समानता थोथा प्रावधान है"

प्रजातन्त्र का उद्देश्य है– "सभी लोगों से समान व्यवहार" इसका आधार सिद्धान्त है कि "प्रत्येक व्यक्ति एक के बराबर ही गिना जाएगा। और कोई भी एक से अधिक के बराबर नहीं" इस प्रावधान को ऐसा पढ़िए– विश्व में छै अरब 'एक' रहते हैं। भारत में एक अरब ग्यारह करोड़ 'एक' रहते हैं। एक–एक गिनती जानवरों में या वस्तुओं में होती है, मनुष्यों में नहीं। यह प्रावधान मनुष्य को पशु या वस्तु मानने का प्रावधान है। मनुष्य जब तक बौद्धिक है, सामाजिक है, अन्तर्सम्बन्धित है, योग्यताधारी है, धनधारी है, भूमिधारी है, परीवारी है वह 'एक' के बराबर नहीं गिना जा सकता। उसका 'कद' 'आकार' दूसरों के समान नहीं हो सकता। गरिमा, महत्ता, शिक्षा, सम्पत्ति देखते कई 'एक' से अधिक होते हैं। कई 'एक' से कम भी

(...शेष पृष्ठ १६ पर देखें)

इस अंक में...

पाठकों से निवेदन, आभार प्रदर्शन..... ०२
जगत और मानव..... ०३
जल सोचता है..... ०५
अध्ययन प्रयोग की प्रस्तावित योजना..... ०८
वैदिक आचार मीमांसा (आलेख ३)..... ११

नक्षत्र, भाग्य, वास्तु, प्रजातन्त्र और स्वयं से घटिया की पूजा सबसे बड़े दुर्भाग्य हैं।

पाठकों से विनम्र निवेदन..!

समादरणीय पाठकों...! सादर नमस्ते जी, चाहे अपरिचित हों या परिचित निष्काम भाव से यह पत्रिका पाठकों तक विगत लगभग १३ वर्षों से निःशुल्क वितरित होती आयी है। इसके अधिकाधिक सदुपयोग की सुनिश्चितता की दृष्टि से अब मैं इस का प्रकाशक एवं सम्पादक आप से विनम्र निवेदन करता हूं यदि इसे भविष्य में भी आप पाना चाहते हैं तो कृपया पत्र अथवा ई-मेल द्वारा सूचित करें। पत्रिका के विषय में आपके अभिप्राय या सुझाव की सदैव प्रतीक्षा रहेगी... **"आर्यवीर"**

(पृष्ठ ४ का शेष...जगत और मानव)

१३) हर आदमी अगर पराई पीर को अपनी पीर समझकर दूर करनेवाला पीर हो जाए तो सारे अनाथाश्राम, विधवाश्रम, वृद्धाश्रम, बालाश्रम समाप्त हो जाएंगे।

१४) यदि तुम डॉक्टर हो, वकील हो, शिक्षक हो, सलाहकार हो, इंजीनियर हो तो चलते-फिरते यह सब हो जाओ। तुम चलते-फिरते डॉक्टर हो जाओ, चलते-फिरते वकील आदि-आदि हो जाओ। इससे तुम्हारा जीवन स्वर्ग हो जाएगा और समाज भी सुखी हो जाएगा। 'भापा' चलता-फिरता उपरोक्त सभी कुछ है।

ब्रह्मलीन डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय

'द्वैत'

दो समानान्तर रेखाएं।
जग है जग और मैं हूं मैं।। (साभार स्वयं)

आभार प्रदर्शन

इस तथा आगामी दो अंकों के प्रकाशन एवं वितरण में श्री मानक जी पोदार (निवासी घाटकोपर, मुम्बई) द्वारा दिया सात्विक दान का प्रयोग किया जा रहा है। आप घाटकोपर मुम्बई पाटीदार वाडी में होनेवाले मेरे प्रवचनों के नियमित श्रोता हैं। .."आर्यवीर"

"जगत और मानव"

१) जगत मानव समूह है। मानव अकेला है। जगत सदायी है। मानव अस्थाई है। जगत श्रेष्ठ नहीं हो सकता। मानव श्रेष्ठ हो सकता है। जगत को श्रेठ होने में लम्बा समय लगता है। जगत को पतित होने में भी समय लगता है। मानव के पतित होने में कम समय लगता है।

२) समाज के तीन घटक होते हैं। एक श्रेष्ठ, दो औसत, तीन घटिया। इसमें घटिया करीब़-करीब़ चालीस प्रतिशत, औसत करीब़ पचास प्रतिशत और श्रेष्ठ करीब़ दस प्रतिशत होते हैं।

३) याद रखो तुम श्रेष्ठ घटक में शामिल हो। तुम्हें जीवन में औसत घटक और घटिया घटक की अनचाही बातें सुननी पड़ सकती हैं।

४) बूढ़े, बालक और गधे की कथा तुमने पढ़ रखी है। बूढ़े एवं बालक को जनता के औसत और घटिया समूह ने अन्त में गधे को ढोकर ले जाने के लिए बाध्य कर दिया था। याद रखो बूढे के गधे पर बैठने पर उसे "कैसा निर्दयी" कहा। बच्चे के गधे पर बैठने से उसे 'स्वार्थी' कहा। और दोनों के गधे पर बैठने से उन्हें "दया-ममता से रहित" कहा था। यह सुन दानों ने गधे को जब उठाकर चलने लगे तो इसी जनता ने उनकी 'गधा' कहकर हंसी उड़ाई थी। औसत दुनियां + घटिया दुनियां के राज्य को प्रजातन्त्र कहते हैं। दुनियां के अनुसार चलोगे तो गधे ठहरोगे।

५) उपरोक्त कथा में सही विकल्प यह है कि बूढ़ा बूढ़ा होने के कारण और बालक छोटा हेने के कारण दोनों गधे पर बैठे। पर घर जाने के लिए रुककर विश्राम का अन्तराल भी रखे। गधे के स्थान पर तुम्हारे पास चल संसाधन हैं। साइकिल, स्कूटर, मोटर-साइकिल, कार, बस आदि सब गधे के संसाधन तुल्य हैं। दुनियां की परवाह न करते इन संसाधनों का श्रेष्ठ उपयोग ही करो।

६) पूरा इतिहास गवाह है समाज नवाचार का भरपूर विरोध करता है। सुकरात, ब्रूनो, एनेक्सगोरस, गैलीलिओ, स्पिनोजा, कुमारिल भट, दयानन्द, हाब्स आदि के नवाचारों तथा नव विचारों पर समाज ने घातक-पातक व्यवहार किया। राजातन्त्र में तो फिर भी नवाचार तो

कभी कदा प्रश्रय पाता था। लेकिन प्रजातन्त्र में जहां राजा भी औसत प्रजा तथा घटिया प्रजा ही चुनती है वहां नव विचारों की भ्रूण हत्या औसत द्वारा सरे आम की जाती है।

७) प्रजातन्त्री जगत में एक गधे से गधे व्यक्ति को भी विचार, विश्वास, उपासना, अभिव्यक्ति की उतनी ही आजादी है जितनी कि विद्वान् से विद्वान् व्यक्ति को। गधे से गधा व्यक्ति विद्वान् से विद्वान् व्यक्ति के विचारों पर थूक दे सकता है और भावनाओं के चोट के अन्तर्गत उस पर मुकदमा भी चला सकता है। याद रखो यहां विद्वत्ता पथ पर चलने में बाधाएं ही बाधाएं हैं। सबसे बड़ी बाधा प्रजातन्त्र है।

८) सुखी सुसंस्कृत समाज के सदस्य बनने से व्यक्ति भी सुखी सुसंस्कृत होता है। दुःखी असंस्कृत समाज का सदस्य होने से व्यक्ति भी दुःखी असंस्कृत होता है।

९) दुःखियों का दुःख दूर करने में सहयोग करने से दुहरी प्रसन्नता का भान होता है। जिसका दुःख दूर हुआ है वह व्यक्ति भी तुम्हें सुखकर होता है। वह भी और तुम स्वयं भी सुखकर होते हो।

१०) प्रेम व्यवहार, सच बोलना, बिना इजाजत अपनों की वस्तु भी न लेना, पुरुष द्वारा नारी समाज और नारी द्वारा पुरुष समाज का आदर करना, दूसरों का आत्मवत आदर ये पांच वे निर्बाध व्यवहार हैं जिनका आचरण हमेशा सबका हित करनेवाला है। इन पांचों व्यवहारों से समाज जुड़ा हुआ है। अतः व्यक्ति निर्बाध होने पर भी ये समाज बाध हैं।

११) अपनी तथा आस–पास की सफाई, अपनी कमाई पर सन्तोष, अपने सुख भोगना तथा अपने दुःख सहना, पढ़ना–समझना–आचरना और साधना करना हर मानव के व्यक्तिगत क्षेत्र हैं। ये समाज बाध नहीं हैं। इनका पालन आजादीपूर्वक किया जा सकता है।

१२) संसार में एक अरब लोग भूख से पीड़ित हैं। इसका सीधा मतलब यह है कि संसार के बाकी पांच अरब लोग बेपीर हैं। पीर वह है जो पराई पीर को अपनी पीर समझकर दूर करता है।

(...शेष पृष्ठ २ पर देखें)

"जल सोचता है..!"

जल शब्द की यास्क जो परिभाषा देता है वह है- **"जीवन को लालसा है जिसकी वह जल है।"** जीवन और जल साथ-साथ इस परिभाषा में सुगुम्फित हैं। जीवन के साथ जल महत्ता दोगुनी-चौगुनी होती है। "जल ही जीवन है" मान्यता का आधार सच यास्क की परिभाषा है। जल का जीवन से सीधा सम्बन्ध है। शरीर में मस्तिष्क में सर्वाधिक जल होता है। **जल प्लावन की स्थिति विशेष में मस्तिष्क की कोशिकाएं अधिक कारगर होती हैं।** जीवन के चिह्न इच्छा, प्रयत्न, गति, वृद्धि, सुख, दुःख हैं जो आत्मा से सीधे सम्बन्धित हैं। आत्मा, जीवन, जल आपस में सुगुम्फित हैं। जल के लिए वैदिक शब्द 'आपः' है। आपः शब्द प्रवहण के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। पृथ्वी, आपः, अग्नि, वरुण, आकाश ये पांच ब्रह्मवाची शब्द भी हैं तथा पंच महाभूतों के भी नाम हैं। इनके सूक्ष्मभूत या गुणभूत स्वरूप गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द हैं। भारतीय संस्कृति में गन्ध है ब्रह्म, रस है ब्रह्म, रूप है ब्रह्म, स्पर्श है ब्रह्म, शब्द है ब्रह्म जैसी महत्वपूर्ण संकल्पनाएं हैं। गन्ध की गन्ध, रस का रस, रूप का रूप, स्पर्श का स्पर्श तथा शब्द का शब्द इन महत्वपूर्ण संकल्पनाओं को समझने का पथ है। आपः का जल के माध्यम से रस से सीधा सम्बन्ध है। जल सर्वाधिक अच्छा घोलक है। जल होम्योपैथिक दवा का वाहक है।

होम्योपैथिक दवा के दो प्रमुख सिद्धान्त हैं। एक सम सम की चिकित्सा करता है। आग से जल जाने पर जल प्रवाह सुखद लगता है। **दूसरा दवा मात्रा सूक्ष्म तथा आवेशित हो जाने से शक्तिकृत हो जाती है एवं जीवन शक्ति को प्रभावित करती है।** दूसरे सिद्धान्त पर विज्ञान प्रश्नचिन्ह लगाता है कि अत्यधिक शक्तिकृत की गई दवा में दवा की मात्रा ही समाप्त हो जाती है। अर्थात् दवा का एक अणु या परमाणु भी उसमें नहीं रह जाता है। पहले हम शक्तिकृत दवा बनाने का सिद्धान्त समझ लें। यह सौ बूंदों में बूंद सिद्धान्त है। पहले सौ बूंद जल में एक बूंद दवा लेकर उसे हिलाते हैं। अच्छी तरह हिलाने से दवा उसमें उतर आती है। इसी हिली दवा की एक बूंद लेकर फिर सौ बूंदों में तनु (सूक्ष्म) करते हैं। इसी

तरह शक्तिकृत करते जाने से दवाई का तन्वीकरण क्रमशः १सी, २सी,... १८सी आदि तक हो जाता है। विज्ञान कहता है कि तन्वीकरण प्रक्रिया में एक स्थिति पश्चात् वाहक (जल या अल्कोहोल) में दवा का एक अणु या परमाणु भी नहीं रह जाता है अतः उसका असर हो ही नहीं सकता। इसलिए वह बस सादा जल या अल्कोहोल है। होम्योपैथी का विश्वास है कि दवा का अणु या परमाणु भी न रहने पर भी दवा प्रभाव जल में रह जाता है तथा वह असर करती है। इस पर दो बार अति सूक्ष्म धरातलीय प्रयोग हुए। पहला प्रयोग १९८८ में हुआ।

१९८८ में विज्ञान की खोज का सार यह है– एक गैर होम्योपैथिक आण्विक वैज्ञानिक ने एक होम्योपैथी की १८सी अत्यन्त तन्वीकृत दवा को लिया। उसने इसके साथ–साथ उसी मात्रा में सादा जल भी लिया। दोनों की छै–छै शीशियां लीं। उन शीशियों को अलग–अलग करके एलर्जी कोशिकाओं के अभिरंजित स्वरूप पर डाला। वह आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि होम्योपैथिक दवावाली शीशी से दवाकृत जल डालने पर कोशिकाओं का रंग बदल गया। उसने प्रयोग कई बार दुहराया परिणाम हर बार वही मिला। **परिणाम निकला कि जल सोचता है। दवा की मात्रा शून्य होने पर भी सोच के अवशेष जल में रहते हैं।** अपनी शोध को उसने लंदन की विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक पत्रिका में १९८८ में छपवाया। सम्पादक मण्डल ने आलेख में दम पाया तभी उसे छापा। पर सम्पादक मण्डल ने एक वैज्ञानिक दल नियत किया जो इस प्रयोग की जांच करेगा। जांच दल में एक वैज्ञानिक, स्वयं सम्पादक तथा एक जादूगर जो अन्धविश्वासों से परे की सोच रखता था शामिल थे। प्रयोग दुबारा किया गया पहलेवाला परिणाम दुबारा प्राप्त हुआ। पर जादूगर ने प्रश्न उठाया कि प्रयोगकर्ता वैज्ञानिक जानता था किन शीशियों में दवा है किनमें नहीं। खैर शीशियों को अलग–अलग चिह्नित किया गया। अब यह वैज्ञानिक नहीं जानता था कि किन शीशियों में जल है किन में दवा। एलर्जी कोशिकाओं पर असर नापा गया। परिणाम यह था कि दवा और जल के प्रभाव मिश्र रहे। प्रयोग टांय–टांय फिस्स हो गया था। जादूगर वैज्ञानिक ने घोषणा की कि जो वैज्ञानिक होम्योपैथी के सिद्धान्त को सिद्ध कर देगा उसे वह अपनी सारी

सम्पत्ति दस लाख डॉलर दे देगा। बहुत लम्बे समय तक किसी ने साहस न किया।

पन्द्रह वर्ष बाद एक वैज्ञानिक पुनः तैयार हुआ। इस बार सूक्ष्मदर्शी पहले से ज्यादा सूक्ष्म था। आण्विक सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग किया गया। १९८८ की प्रक्रिया दुहराई गई। वैज्ञानिकों को विश्वास था कि जल में सोच सिद्ध हो जाएगी। उसने जादूगर से दस लाख डॉलर तैयार रखने को कहा। अन्तिम परिणाम यह रहा कि जल और तन्वीकृत दवा बराबर असरकर या न असरकर है। और प्रयोग द्वारा होम्योपैथिक दवाएं सादी गोलियां या सादा द्रव्य सिद्ध हुईं। पर क्या यह सच है? तनिक नहीं। हम होम्योपैथी के सिद्धान्त के परिपेक्ष्य में इस पर विचार करें।

होम्योपैथी के दो सिद्धान्त सम सम की चिकित्सा करता है तथा शत शत तन्वीकरण के साथ इसका मूल सिद्धान्त जीवन शक्ति के दुःप्रभावित होने से रोग तथा दवा के जीवन शक्ति को सुप्रभावित करने का है। उपरोक्त प्रयोगों में इस सिद्धान्त का ध्यान नहीं रखा गया है। जीवन शक्ति क्या है? क्या जीवन शक्ति का भौतिक माप सम्भव है? क्या आण्विक सूक्ष्मदर्शी जीवन शक्ति को प्रभावित करनेवाले तत्व का माप किया जा सकता है? इन प्रश्नों के उत्तरों में होम्योपैथी का रहस्य छिपा हुआ है। "जीवन शक्ति" आत्मा की अभिव्यक्ति है। इसका भौतिकी माप असम्भव है। कोई भी आण्विक सूक्ष्मदर्शी इसका मापन नहीं कर सकता है। यह जीवन शक्ति अपने आप में अनूठा तत्व है। और यह जीवन शक्ति से ही प्रभावित होता है या ज्ञात होता है। इस परिपेक्ष्य में प्रथम प्रयोग एक महत्वपूर्ण उत्पत्ति देता है। १९८८ की तटस्थ सच्ची भौतिकशास्त्री महिला ने जब होम्योपैथिक दवावाली छै शीशियों पर जानते हुए जानते हुए प्रयोग किए थे तो हर बार शीशियों में दवा प्रभाव सिद्ध हुआ था। उसके दवा शीशियों के न जानने पर प्रयोग फेल हो गया था। कारण स्पष्ट है उसकी जीवन शक्ति के प्रभाव में जड़ दवा में जीवन शक्ति को प्रभावित करनेवाला तत्व पकड़ में न आ पाया। वास्तव में होता यह है कि होम्योपैथिक दवा लेनेवाला मरीज यह जानता है कि जीवन शक्ति को सुप्रभावित करनेवाली दवा वह ले रहा है। इसीलिए दवा कारगर होती है। मेरे स्वयं के और अन्य होम्योपैथिक डॉक्टरों के अनुभव से भी यह सिद्ध बात है। ...**(शेष पृष्ठ १६ पर देखें)**

"अध्ययन प्रयोग की प्रस्तावित योजना"

'दशरूपकम्' की वर्तमान युग में उपादेयता

अध्ययन/परियोजना की रूपरेखा एवं विशेषताएं–

(१) शीर्षक :– 'दशरूपकम्' की वर्तमान युग में उपादेयता

(२) शोध कारण :– वर्तमान युग 'खुला विचार' युग है जिसमें विचार तथा कार्यों में इतना बिखराव आ गया है कि युग स्वछंद हो गया है– मर्यादाएं बुरी तरह टूटी हैं। आज के युग में आदमी एक भटकाव में भटक जाता है। आलोचना भी एक खुले भटकाव में उलझ कर रह गई है और लक्ष्य विहीन अवस्था तक पहुंच गई है। मनमानी को बुद्धि सम्मत करने की आज होड सी लगी है। बिना विश्व मानकों को तय किए हर क्षेत्र में विश्वीकरण की खुली खुसपैठ ने परिस्थितियों की जटिलता बढ़ा दी है। **दशरूपकम् एक नाट्य शास्त्र की विधा है– जो "दृष्य–श्रव्य" प्रस्तुतीकरण के सांस्कृतिक मापदंड बताती है।** इस विधा के वर्तमान युग में कई उपयोग हैं। तकनीकी क्षेत्र में यह कामूआत या पर्ट (Pert) रूप में प्रयुक्त है। हर उपन्यास अधिकारिक, प्रकरी, पताका या दशरूपकम् बिना अधूरा है। दृष्य श्रव्य फिल्में इसी दशरूपकम् के मानक अनुरूप होने से ही सफल हैं यह सिद्ध करना आज के युग की आवश्यकता है। जीवन के हर कार्य में दशरूपकम्–आयोजना के रूप में प्रयुक्त हो सकती है।

(३) विशेषताएं – १) यह "सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक" साहित्यिक (सांतसासा) है। २) नाट्यशास्त्र–नाचा, गम्मत, स्वांग आदि रूपों में भारत के गांवों में व्यापक प्रचिलत है। सारा श्रमिक वर्ग इससे भिज्ञ है अतः यह तकनीक उत्पादकता उपयोगी भी है। ३) विश्व की प्रसिद्ध फिल्में– साउंड आफ म्यूजिक, सन आफ अरेबिया, ३६ चेम्बर आफॅ शाओलिन, जुरासिक पार्क, डॉ. जिवागो, अपुर संसार, पाथेरपांचाली आदि में धोखे से दशरूपकम् की अनुरूपता अपेक्षाकृत अधिक रही है। विश्व परिपेक्ष्य में भी दशरूपकम् महत्वपूर्ण है। ४) भारत की प्रसिद्ध फिल्में शोले, जय संतोषी मां, दीवार, हम आपके हैं कौन, दिल वाले दुल्हनियां ले जाएंगे आदि की सफलता का आधार भी अप्रत्यक्ष रूप में इनका 'दशरूपकम्' के अनुरूप होना है। ५) दशरूपकम् में तनिक सुधार के साथ इससे वर्तमान परियोजना प्रबंधन

(Project Management) का आदर्श प्रारूप गढ़ा जा सकता है जो विश्व में प्रबंधन क्रांति कर सकता है। ६) उपरोक्त परियोजना प्रबंधन प्रारूप दैनिक जीवन व्यवस्था जो चार आश्रमों, सोलह संस्कारों, पांच यज्ञों, शत वर्षों में विभाजित है कि लिए तथा विवाह, उत्सव, बड़े समारोहों के आयोजनों में भी उपयोगी होगी। ७) विश्व के प्रसिद्ध नोबल पुरस्कार प्राप्त उपन्यासों यथा गुड अर्थ, लांग जर्नी, डा. जिवागो, ओल्ड मैन एंड सी, हंगर आदि का दशरूपकम् के आधार पर विश्लेषण तथा तुलना साहित्य के क्षेत्र में दशरूपकम् का योगदान होगा। ८) भारत के प्रसिद्ध उपन्यासों गोदान, गुनाहों का देवता, मैला आंचल, सारा आकाश, देवदास, आदि का दशरूपकम् विश्लेषण भारतीय साहित्य जगत को नये आयाम देगा। ९) प्राचीन भारतीय प्रसिद्ध कथानकों महाभारत, रामायण, नल–दमयन्ती, मृच्छिकटिकम्, आदि के उपलब्ध विश्लेषण का पुनर्मूल्यांकन दशरूपकम् के आधार पर करना इनकी पुनर्स्थापना करेगा। १०) भारत की योजनाओं का दशरूपकम् के आधार पर मूल्यांकन करते भविष्य की योजनाओं को सुसंगत किया जा सकेगा। "दशरूपकम् की वर्तमान युग में उपादेयता" का शोध कार्य उपरोक्त दस विशेषताओं से युक्त व्यापक होगा।

(४) पद्धति :– वैज्ञानिक पद्धति १) प्राकल्पना, २) अवलोकन, ३) तथ्य संकलन, ४) सारणीकरण, ५) निष्कर्ष की आधुनिक पद्धति के साथ–साथ प्राचीन पंच परीक्षा, ६) प्रमाण, ७) प्रतिपक्ष समालोचना, ८) सिद्धान्त अविरुद्धता, ९) पांच अवयय- अ) प्रतिज्ञा, ब) हेतु, स) उदाहरण, द) उपनय, ई) निगमन का प्रयोग शोध कार्य में किया जाएगा।

(५) अध्ययन चरण :– १) इतिहास, अ) भारतीय, ब) पाश्चात्य, २) विश्वीकरण, ३) तथ्य संकलन, ४) विश्व साहित्य परिपेक्ष और दशरूपकम् ५) भारतीय साहित्य परिपेक्ष और दशरूपकम् के नाचा, गम्मत, स्वांग में अंश, ६) विश्व परियोजना प्रबंधन, ८) भारतीय परियोजना प्रबंधन, ९) परियोजना प्रबंधन का भविष्य, १०) भविष्य का परियोजना प्रबंधन, ११) उपसंहार।

(६) पूर्णतः– शोध कार्य की पूर्णता में करीब दो वर्ष का समय लगेगा। इसी मध्य इसके कुछ अंश विभिन्न संस्थानों को भेजे जाएंगे ताकि इसके परिणामों का आधार ढांचा तैय्यार किया जा सके।

(७) अनुमानित परिणाम :– १) परियोजना निर्माण कार्यों में लगने वाले समय में करीब दस प्रतिशत की कमी होगी। २) श्रमिकों का नव प्रबन्धन विधाओं से सहजता पूर्वक परिचित होना। ३) फूहड़ फिल्मों के निर्माण पर रोक। ४) फिल्म जगत में व्यवसाय हानि करीब ४०० करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की बचत। ५) साहित्य क्षेत्र में उपयोगी मानकी करण। ६) नोबल पुरस्कार (साहित्य एवं फिल्म क्षेत्र के) चयन में सुविधा तथा वैज्ञानिकता। ७) विश्व पर्ट का दशरूकम् या कामूआत (कार्य मूल्यांकन आकलन तकनीक) रूप में नवीनीकरण तथा विश्वसनीय रूप में इसकी स्थापना। ८) रामायण तथा महाभारत कथाओं की वैज्ञानिकता की विश्वमान्य स्वीकृति।

(८) परिणाम अवधि :– दो वर्ष पश्चात से सतत पन्द्रह वर्षों तक। "सांतासासा" एक संपूर्ण क्रांति योजना है। श्री विंसेन्ट टेलर ने वर्क एंड मोशन स्टडी द्वारा तकनीकी क्रांति की, एल्टन मेयो ने इसमें अंश सामाजिकता का समोवश किया तथा 'तसा' (तकनीक सामाजिक) को बढ़ाया, इशिकावा ने इसमें जापानी संस्कृति के अंश का समावेश किया। दशरूपकम् द्वारा यह सांतसासा (सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक साहित्यिक–Cultro Techno Socio Litero) रूप में सर्वांग क्रांति करेगी ही।

ब्रह्मलीन डॉ.त्रिलोकी नाथ क्षत्रिय

हमारे प्रकाशन

१.क्रियात्मक नेतृत्व, २.सकारात्मक नेतृत्व, ३.सांतसा एवं पर्यावरण, ४.अयोध्या विजय सूत्र, ५.परिवार, ६.स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती- एक सानिध्य आशीष भरा, ७. सूत्रस्य सूत्रम् (सतयुग संभव है), ८.आप्ता, ९.प्रथमम्, १०.वैदिक जीवन भारती, ११. अगाओ की किताब बेकुबा, १२.अति-आत्म साधना, १३.बीजवृक्ष, १४.भापा के भजन, १५.मृत्यु, १६.हृदय चिकित्सा, १७.नवं नवम् परिवार प्रबन्धन, १८.अमृता प्रीतम और मेरी कविताएं। १९. परीक्षा में सफलता के सूत्र, २०.गृहणी सफलता के सूत्र, २१. सफल जीवन-साथी सूत्र, २२.अतिसमय प्रबन्धन, २३.त्रैतवाद, २४.संक्षिप्त होम्योपैथी दिग्दर्शिका, २५.घेरों को घेर दो, २६.गहन साक्षर कविताएं, २७.संक्षिप्त होम्योपैथी दिग्दर्शिका, २८.कव्य हव्य अछंदमय, २९. मेघदूतम्-२००६, ३०.दशरूपकम्, ३१. प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति, ३२.स्वयं। **सांतसा विशेषांक :** १.विज्ञान कथा आदमी एवं प्रजतन्त्र संविधान, २.भगवाकरण, ३.भापा की कथाएं, ४.ओम् वेदोऽसीत्-सांगोपांगादि अध्ययन पद्धति। **ध्वनिमुद्रित :** १. भापा के भजन भाग १ से ३, अति आत्म साधना।

वैदिक आचार मीमांसा... आलेख ३

...पिछले अंक के आलेख से आगे।

फ) वेद का यथार्थ स्वरूप :– वेद शब्द का अर्थ एक 'विद्' धातु ज्ञान हेतु दूसरी विद् धातु सत्ता हेतु, तीसरी 'विदलृ' धातु लाभ हेतु ओर चौथी विद् धातु का अर्थ विचार है– इस प्रकार **ज्ञानार्थ सत्तार्थ, लाभार्थ एवं विचारार्थ अर्थवाली धातुओं से करण तथा अधिकरण कारक में 'घञ्' प्रत्यय करने से वेद शब्द सिद्ध होता है।** अर्थात् जिनमें सब सत्य विद्याओं की सत्ता है तथा सत्य विद्याएं जिनके द्वारा जानी, विचारी तथा प्राप्त की जाती है, उन्हें वेद कहते हैं। 'वेद' विद् ज्ञाने (अदादि) से निर्मित है अतः मानव मात्र को उपयोगी ज्ञान का प्रेरक है। "वेद हमारे विश्वास और विचार के मूलाधार हैं हमारे जीवन और संस्कृति का प्रासाय वेदों के आधार पर ही निर्मित हुआ है।" (**डॉ.रामानंद तिवारी**– भारतीय दर्शन की भूमिका पृ.६७) भारत में जीवन और जीवन व्यापार का संपूर्ण आधार वेद उद्गमित धर्म ही हैं। वेद संपूर्ण भारतीय संस्कृति के प्राण, संस्कृति का सार सर्वस्व है। भारत के धर्म और अध्यात्म, दर्शन और नीतिशास्त्र, कला और काण्य, ज्ञान और विज्ञान के आदि उद्गम वेद ही है। (**जगनाथ वेदालंकर**– भारतीय अक्टूबर १९६३ पृ.६८)

"वैदिक धर्म जो वेद पर आधारित है दार्शनिक धर्म है।" अन्य समस्त राष्ट्रों ने धर्म की ओर धर्म ने दर्शनों की निन्दा की है केवल भारत ही एक ऐसा अकेला देश है जहाँ दर्शन और धर्म ने एक साथ मिलकर कार्य

"वैदिक आचार मीमांसा" विषय पर स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय द्वारा लिखित तथा पं.रविशंकर विश्वविद्यालय (रायपुर, छ.ग.) से स्वीकृत शोध प्रबन्ध हम क्रमशः दे रहे हैं। कालान्तर में इसे पृथक् ग्रन्थ के रूप में मुद्रित कराने का प्रयास रहेगा। इस अंक में प्रकाशित सामग्री को देखते हुए इस अमूल्य वैदिक धरोहर को प्रकाशित करने हेतु कोई महानुभाव या संस्थान इच्छुक हों तो कृपया सम्पादक से निम्न संकेतों पर सम्पर्क करें...

E-mail : aryaveer@rediffmail.com
*दूरभाष : ९८९२९८९७२३...**"आर्यवीर"***

किया है। यहाँ धर्म दर्शन द्वारा उन्मूल हुआ और दर्शन ने धर्म द्वारा अध्यात्म तत्वानुभव प्राप्त किया। (Max Muller Six System of Indian Philosophy- पृ.४०६) वेदों द्वारा उद्‌भुत आर्य वैदिक धर्म ही वह आचार धर्म है जो न केवल दर्शन और धर्म, विज्ञान एवं अध्यात्म वनन विश्व तथा मानव में भी एक सामंजस्य स्थापित करता है। "वेद गीतों में हम उन मूलभूत सिद्धांतों से परिचित होते हैं जो विश्व सामंजस्य संतुलन एवं सामाजिक जीवन व्यवस्था के लिए अत्याधिक आवश्यक है। वैदिक ऋचाओं में निहित सिद्धांत यदि जीवन में अवतरित कर लिए जाएं तो गृह और विश्व सामंजस्यमय एक में बंध जायेंगे।" (**Ayodhya Prasad**– Vedic thoughts पृ.८)

"श्रुति भारतीय दर्शन का हृदय है- श्रुति अत्यंत विशाल और उदार है। इस उदार श्रुति के विशाल अंक दर्शन शिशु को मुक्त क्रीडा का सौभाग्य प्राप्त हुआ।" (**डॉ.रामानंद तिवारी–** भारतीय दर्शन की भूमिका पृ. १०६-१०७) 'श्रु' धातु श्रवण अर्थ में है इससे करण कारक में 'क्तिन्' प्रत्यय के होने से 'श्रुति' शब्द सिद्ध होता है) अतः "सृष्टि के आरंभ से आज पर्यन्त और ब्रह्मादि से लेके हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओं को सुनते आते हैं इससे वेदों का श्रुति नाम पड़ा है।" (**दयानन्द–** ऋग्वदोदि मानव भूमि का-पृ. २६) अष्टाध्यायी में वेदों के नाम छंद, मंत्र और निगम भी हैं। (अष्टाध्याय्याम् २/४/८०, ३/४/६, ६/४/६) "मंत्रेघसह्शवृदहाद्-वृच्कृगमिजनिभयो लेः। छन्दांसि लुङ्-लङ्-लिटः। वाषपूर्वस्य निगमे।" "वेदों का नाम छंद इसलिए रखा कि वे स्वतंत्र प्रमाण और सत्य विद्याओं से परिपूर्ण हैं तथा उनका नाम 'मंत्र' इसलिए है कि उनसे सत्य विद्याओं का ज्ञान होता है और श्रुति इसलिए कहते हैं कि उनके पढ़ने से अभ्यास करने और सुनने से सब सत्य विद्याओं को मनुष्य लोग जान सकते हैं। इसी प्रकार जिससे सब पदार्थ का यथार्थ ज्ञान हो उसको निगम कहते हैं।" (ऋग्वेदादि मानव भूमिका पृ. १०४) वेदों के नाम करीब-करीब पर्यायवाची हैं। वेद शब्द की परिभाषा से स्पष्ट है कि वे मानवोपयोगी सृष्टि ज्ञान एवं ब्रह्मज्ञान याने संपूर्ण ज्ञान के भंडार हैं। इसे परा एवं अपरा विद्या भी कहते हैं।

य) वेदों की विषय वस्तु :– वेद की वेदता इसी में है कि वे प्रत्यक्ष से

अगम्य तथा अनुमान के द्वारा अनुद्भावित अलौकिक सत्ता का बोध कराते हैं। (**श्रुतिश्च नः प्रमाणामतीन्द्रियार्थ विज्ञानोत्पत्तौ–** शंकर भाष्य २/३/१) **चारों वेदों में संपूर्ण लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान है।** इसे कर्मकांड और ब्रह्मकांड भी कहा जा सकता है। **यास्क** ऋचाओं को परोक्ष, प्रत्यक्ष, अध्यात्मिक अर्थों की बोधक इन तीन विभागों में बांटते हैं। (निरुक्त ७/१ **"तास्त्रिविधा ऋचः परोक्षकृता प्रत्यक्षकृताः आध्यात्मिकाश्च।"**) दृष्य, अदृष्य (अनुभूतिजन्य) एवम् ब्रह्म विषयक मंत्रविभाग सर्वांगणीय ज्ञान के वेदों में होने की पुष्टि करते हैं। चारों वेदों के चार ही विषय हैं। १) ज्ञान, २) कर्म, ३) उपासना, ४) विज्ञान। **ज्ञानकांड में ईश्वर, प्रकृति और जीव विषयक विशेष ज्ञान का विवरण है। ईश्वर से लेकर तृण पर्यंत पदार्थों का साक्षात्पूर्वक ज्ञान विज्ञान शब्द में अभिव्यक्त है। कर्म दो प्रकार का है। एक मोक्ष साधना और द्वितीय इहलोक के व्यवहारों की साधना। ईश्वर की स्तुति और आत्म साक्षात्कारपूर्वक ईश्वर प्राणिधान करना उपासना कहाती है।** (**पं. जयदेव शर्मा–** सामवेद संहिता भाषा भाष्य भूमिका पृ. १; **दुर्गा त्रिपाठी–** कल्याण– हिन्दु संस्कृति अंक– पृ. २४४)

वेद एवं वेदाधारित साहित्य को चार प्रमुख प्रतिपाद्य विषय हैं। १) 'हेय' त्याज्य क्या है? उसका स्वरूप? २) 'हेयहेतु'– त्याज्य दुःख का कारण, ३) 'हान'– दुःख का अत्यंताभाव तथा ४) 'होनोपाय'– नितान्त दुःख निवृत्ति या आनंद प्राप्ति के साधन। (ओमानन्द– पातंजल योग प्रदीप– पृ.१८) इन विषयों का सम्बन्ध तीन तत्वों से है १) चेतन तत्व आत्मा या पुरुष (जीव), २) जड तत्व, ३) चेतन तत्व परमात्मा– पुरुष विशेष (ईश्वर या ब्रह्म)। (ओमानन्द– पातंजल योग प्रदीप– पृ.१८)

र) वैदिक संस्कृति एवं दर्शन :– ऋग्वेद का संगठन सूत्र (ऋग्वेद १०/१९१) समाजशास्त्र की अधुनातन परिभाषाओं की ओर सशक्त इंगन है। धर्म में रत सब मिलकर एक वाणी एक अर्थ (ऋग्वेद १०/१९१) एक सा मंत्र, समान प्राप्ति, सम अतकरण, समान विचार, सम ज्ञान, समहविष्य–आहुति दान, हो तथा अभिमन्त्रित सबके हित मन्त्र भी समान हो। (ऋग्वेद १०/१९१/२) समचेष्टा, सम निश्चय, तुल्य अंतस्, सबके अंतःकरण उदार हों एवं समता के साकार निवास हो। (ऋग्वेद १०/१९१/३) ऐसे आदर्श

संगुम्फित समाजशास्त्र के संज्ञान सूत्र वेद की महता हैं। ये मन्त्र आधुनिक समाजशास्त्र की परिभाषाओं से अधिक हैं। ये सामाजिक जीवन के उच्चतम क्रियात्मक दर्शन को दर्शाते हैं।

उपरोक्त संगठन सूत्रों के समानंतर समाजशास्त्र की आधुनिक परिभाषाओं "सम्बन्धों का जाल"(Maciuer and Page- Society- Mac Millan & Co Ltd. Loudon 1950 पृ. ५) जीवित प्राणियों की संपर्कगत अन्तः क्रियाएं,(Giddings- Introductive Sociology पृ. ६) अन्तः सम्बन्धों का सामान्य विज्ञान (P.A. Sorokin – Society, Culture and Personality- Harper & Bros.- New York 1948 पृ.१६) सामूहिक प्रतिनिधित्व का विज्ञान (Emile Durkheim- "Sociology is the science of collective representation) और सामाजिक क्रिया का अर्थपूर्ण बोध (Max weber- Social and Economic Organisation 1947 page 80.) का अस्तित्व अन्तर्भूत है।

इसी प्रकार वैदिक राष्ट्रगीत (यजुर्वेद २२/२२), नासदीय सूक्त (ऋग्वेद १०/१२६/१-६), पृथ्वी सूक्त (अथर्ववेद १२/१), धनान्नदान सूक्त (ऋग्वेद १०/११७), ऋत सूक्त (ऋग्वेद १०/१६०), श्रद्धा सूक्त (ऋग्वेद १०/१५१), प्राण-अभय सूक्त (अथर्ववेद २/१५), गृहमहिमा सूक्त (अथर्ववेद ३/२६/१२), पवमान सूत्र (अथर्ववेद ३/२६) तथा दीर्घायु सूक्त (अथर्ववेद ६/१८) आदि आदि संक्षिप्त पर स्पष्ट शब्दों में मानव जीवन आचार के महत् रहस्य को प्रदर्शित करते हैं।

वैदिक साहित्य के सांस्कृतिक एवं दार्शनिक स्वरूप को उपरोक्त सूत्र सार रूप में बतलाते हैं। मनुष्य की भूषणभूत सम्यक् कृति या चेष्टा ही संस्कृति है। (ब्रह्मानन्द- बद्रिकाश्रम शंकराचार्य हिन्दु संस्कृति अंक-पृ.१३) 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में 'सुट्' का आगम करके 'क्तिन्' प्रत्यय करने से संस्कृति शब्द बनता है। इसका अर्थ है- भूषण-भूत-सम्यक्-कृति। "लौकिक, परलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक अभ्युदय के उपयुक्त देहेन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकारादि की भूषण भूत सम्यक् चेष्टाएँ एवं हलचलें ही संस्कृति है। (करपात्री जी- हिन्दु संस्कृति अंक-पृ.३५) संस्कृति के सारे ही तत्व वेद मंत्रों में मिलते हैं।

दर्शन शब्द का व्युत्पत्ति लब्ध अर्थ है- दृष्यते अनेन इति दर्शनम्-

अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए। वस्तु का तात्विक रूप जना जाए वह दर्शन है। यह अर्थ फिलासफी (अनुराग+विद्या=विद्यानुराग) से अलग संदर्भ में है। प्लेटो दर्शन को दिव्य ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास (ज्ञान गंगा पृ.४५) कहता है। स्वयं को जानने एवं अपने व्यक्तित्व से परिचित कराने वाली विचार ध ारा दर्शन है।(ज्ञान गंगा पृ.४५) के विचारों में हमें भारतीय 'दर्शन' मान्यता से समानता मिलती है। भारतीय दर्शन दुःख–त्रय– आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक के रात्रि दिव विघात से उद्विग्न हो इनके आमूल उच्छेद करने की भावना से प्रेरित हुआ साध्य के गन्तव्य की प्राप्ति पर साधन एवं साधक शक्ति के आधार पर इस समस्त की व्याख्या में प्रवृत्त होता है। इसका वास्तविक प्रयोजन मनुष्य की आत्मा में अपरोक्ष अनुभूति और लोक व्यवस्था में उसका साक्षात प्रतिष्ठापन है। आध्यात्मिक साधना उसका साधन और नैतिक आचार उसका मार्ग है। (**डॉ.रामानन्द–** भारतीय दर्शन की भूमिका पृ.३३६) वैदिक दर्शन व्यवहाराभिमुख भी होने के कारण समस्त परवर्ती विचार एवं व्यवहार की प्रेरणा का आधार रहा है। वैदिक ऋषि प्रार्थना करते हैं। **यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वाघास्याहम्। स्युष्टे सत्या इहाशिषः।** (ऋग्वेद ६३/४०/३) "अर्थात् हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् यदि मैं तू हो जाऊं और तू मैं हो जाए अर्थात् द्वैत भाव मिटकर एकत्वभाव उत्पन्न हो जाए तो तेरा आर्शीवाद कि विश्व सुखी हो– सत्य हो जाए।"

अर्न्तयामी परमात्मा–बीज, अन्तरात्मा–मूल एवं मन अंकुर से विकसित अध्यात्म ध्यान उपासना, वैराग्य एवं मोक्ष तथा, कर्म, अर्थ के सम्पूर्ण मानवोपयोगी ज्ञान के प्रदाता हैं वेद। (**ब्रह्ममुनि–** वैदिक वन्दन– पृ.ख भूमिका से) यही वेद तथा वेदाधारित साहित्य की दार्शनिक एवं सांस्कृतिक महत्ता है। काल दृष्टि से वेद महता के सर्वाधिक निकट प्रमाण ब्राह्मण विक्षेपित, कम धूमिल तथा सर्वाधिक निर्भ्रान्त एवं यथावत सत्यों के अनुरूप है। उनके अनुसार भी वेद नित्य अपौरुषेय, शाश्वत, समस्त ज्ञान के आधारादि है। ...शेष आलेख क्रमशः अगले अंकों में पढ़ें।

ब्रह्मलीन.डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय
पी.एच.डी.(वेद), एम.ए.(आठ विषय), सत्यार्थ शास्त्री, बी.ई., एल.एल.बी.,
डी.एच.बी., पी.जी.डी.एच.ई.,एम.आई.ई., आर.एम.पी. (१०७५२)
प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४, स्मृतिनगर, भिलाईनगर, जि.दुर्ग, ४६००२० छत्तीसगढ

(पृष्ठ ७ का शेष...जल सोचता है)

वास्तव में जल सोचता नहीं है पर दवा प्रभावित जल उपपादित जीवन शक्ति के प्रभाव में सोचता है यह १९८८ के प्रयोग से सिद्ध है। दवा के जल या अल्कोहोल में दो प्रभाव होते हैं। एक मात्रात्मक, दूसरा गुणात्मक। अतितन्वीकृत दवा में मात्रात्मक प्रभाव शून्य के लगभग रह जाता है पर गुणात्मक प्रभाव बराबर रहता है। और यही दुष्प्रभावित जीवन शक्ति को सुप्रभावित करता है तथा चिकित्सा में लाभदायी होता है।

ब्रह्मलीन डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय

(पृष्ठ १ का शेष... लोकतन्त्री समानता थोथा प्रावधान है।)

होते हैं। अतः उन्हें 'एक' के बराबर कहना, मानना महाथोथा प्रावधान है, काल्पनिक प्रावधान है। प्रज–तन्त्र में हर मानव उम्र, अनुभव, योग्यता आदि के क्रम से स्तरीकृत होगा तथा जो होगा वही समझा जाएगा। प्रज–तन्त्र की स्थापना हेतु प्रजातन्त्र हत्या जरूरी है।।८।।

(साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

सूचना

१७ जनवरी को स्वर्गीय डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय का प्रथम महानिर्वाण दिवस है। इस उपलक्ष्य में **सांतसा** का **श्रद्धांजलि विशेषांक** निकाला जा रहा है। कई महानुभाव मुझे मिले जिनके लिए डॉ.क्षत्रिय जी के इच्छामरण की घटना आज भी अप्रत्याशित, अविश्वसनीय तथा दुःखद है। कई ऐसे भी मिले जो किसी कारण इस वर्ष प्रकाशित श्रद्धांजलि अंक में अपने मनोगत नहीं प्रकाशित करा सके थे।

आगामी श्रद्धांजलि अंक तपस् माह जो पौष–माघ २०६७ तदनुसार दिसंबर–जनवरी में प्रकाशित होगा। आप सभी महानुभाव जो स्व.डॉ. त्रिलोकीनाथ जी से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष जुड़े हैं, उक्त अंक में अपने मनोगतों को सांतसा पाठकों तक पहुंचा सकेंगे... "आर्यवीर"

"आर्यवीर प्रकाशन" के लिए इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन सम्पादक ब्र. अरुणकुमार "आर्यवीर" द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित कराया गया। मुद्रक : प्रिंटकॉन, अहमदाबाद ✆०७९–३२९८३११८